छत्तीसगढ़ी दानलीला

पं. सुन्दरलाल शर्मा द्वारा सन् 1903 में
रचित छत्तीसगढ़ी प्रबंध काव्य

संपादन

हरि ठाकुर

891.491
ठाकु द/छ
14777

विशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय,
रायपुर (छत्तीसगढ़)

छत्तीसगढ़ी-दानलीला

पं. सुन्दर लाल शर्मा द्वारा सन् 1903 में रचित छत्तीसगढ़ी प्रबंध-काव्य

•

संपादन

हरि ठाकुर

अवाप्ति क्र० 14777
वर्ग क्रमांक
रायपुर

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय

रायपुर (छत्तीसगढ़)

891.491
ठाकुर द
14777

छत्तीसगढ़ी-दानलीला

(पं. सुन्दर लाल शर्मा द्वारा रचित छत्तीसगढ़ी प्रबंध-काव्य)

प्रकाशक	:	**कुलसचिव, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़)**
प्रकाशन वर्ष	:	**25 दिसंबर, 2000**
मुद्रण व्यवस्था	:	**विश्वविद्यालय मुद्रण प्रयोगशाला एवं मुद्रणालय, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़)**
मूल्य	:	**20 रु.**

प्रस्तावना

छत्तीसगढ़ में स्वतंत्रता-आंदोलन, समाज-सुधार आंदोलन और साहित्य-सेवा तीनों एक साथ पूरी समग्रता के साथ करने वाले तपस्वियों में **पं. सुंदर लाल शर्मा** सबसे अग्रणी रहे। आजादी के आंदोलन के अग्रदूत पं. सुंदर लाल शर्मा से राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी भी प्रभावित थे।

छत्तीसगढ़ी साहित्य के नींव-स्तंभों में भी पं. सुंदर लाल शर्मा सबसे अग्रणी हैं। **'छत्तीसगढ़ दानलीला'** उनकी महत्वपूर्ण कृति है। यह छत्तीसगढ़ी का प्रथम प्रबंध-काव्य है। इस प्रबंध-काव्य के माध्यम से उन्होने तत्कालीन समाज को जागरुक किया। छत्तीसगढ़ी-दानलीला सहित अनेक ग्रंथों की रचना उन्होने की थी परंतु उनकी पांडुलिपियाँ कुछ लोगों तक सीमित रहीं। विश्वविद्यालय ने ऐसी पांडुलिपियों को प्राप्त कर प्रकाशन एवं शोध के लिए सर्वजन को उपलब्ध कराने का अथक प्रयास किया। विश्वविद्यालय को वरिष्ठ साहित्यकार श्री हरि ठाकुर से छत्तीसगढ़ी-दानलीला की सन् 1924 में प्रकाशित प्रति प्राप्त हुई है और उनके संपादन में इसका पुनर्प्रकाशन किया जा रहा है।

छत्तीसगढ़ी-दानलीला के माध्यम से छत्तीसगढ़ के नव निर्माण में यह ग्रंथ प्रेरणा स्रोत का कार्य करेगा एवं पं. सुंदर लाल शर्मा के आदर्शों को व्यवहार में लाने की दिशा में उनका साहित्य मार्गदर्शक का कार्य करेगा। इसी विश्वास में विश्वविद्यालय का यह प्रयास प्रस्तुत है।

आचार्य रणवीर सिंह शास्त्री
कुलपति

प्रकाशकीय

छत्तीसगढ़ी दानलीला की दुर्लभ प्रति को संपादित कर के विश्वविद्यालय को प्रदान करने के लिए विश्वविद्यालय प्रशासन वरिष्ठ साहित्यकार श्री हरि ठाकुर के प्रति आभारी है । छत्तीसगढ़ी दानलीला छत्तीसगढ़ी साहित्य की एक महत्वपूर्ण कृति है, साथ ही छत्तीसगढ़ी को स्थापित करने के लिए यह एक प्रमाणिक ग्रंथ भी है ।

विश्वविद्यालय में पं. सुंदरलाल शर्मा ग्रंथागार भी स्थापित है । यह ग्रंथागार देश के छह प्रमुख ग्रंथागारों मे है और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की योजना के अनुसार यह उपग्रह से जुड़ा हुआ है । विश्वविद्यालय में पं. सुंदरलाल शर्मा शोधपीठ भी है जिसमें छत्तीसगढ़ की भाषा, साहित्य और संस्कृति पर गहन शोधकार्य का लक्ष्य भी रखा गया है ।

छत्तीसगढ़ी दानलीला का यह प्रकाशन छत्तीसगढ़ी भाषा और साहित्य के नए सिरे से अन्वेषण और उसे राष्ट्रीय क्षितिज पर सम्मानजनक स्थान दिलाने की दिशा में प्रतिनिधि भूमिका निभाएगा, ऐसी आशा है । विश्वविद्यालय पं. सुंदरलाल शर्मा की अन्य महत्वपूर्ण कृतियों की पांडुलिपियाँ और प्रकाशित दुर्लभ ग्रंथों को भविष्य में भी प्रकाशित करेगा और इस दिशा में साहित्यकार तथा इतिहासकार विश्वविद्यालय से जुड़ेंगे, इसी प्रत्याशा के साथ यह प्रबंध काव्य प्रस्तुत है ।

ब्रजेश चंद्र मिश्र
कुलसचिव

छत्तीसगढ़ी दानलीला : ठेठ भाषा का ठाठ

छत्तीसगढ़ी दानलीला छत्तीसगढ़ी साहित्य की आधार-कृति है। विशेषकर तत्कालीन समय में इस प्रबंध-काव्य ने छत्तीसगढ़ी कविता को प्राण दिया। अनेक विद्वानों ने इस प्रबंध-काव्य की समीक्षा की और इसकी प्रशंसा करते हुए इसे महत्वपूर्ण कृति के रूप मे प्रतिस्थापित किया है। इस संकलित आलेख में छत्तीसगढ़ी दानलीला के संबंध में छत्तीसगढ़ के चुनिंदा विद्वानों के विचार प्रस्तुत किए जा रहे हैं तीक इस ऐतिहासिक ग्रंथ की महत्ता में और अधिक वृद्धि हो सके। पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर से शोधछात्रा ने रीता तिवारी ने आचार्य डॉ. रमेंद्र नाथ मिश्र के निर्देशन में पं. सुंदरलाल शर्मा पर महत्वपूर्ण शोध किया है जिसमें दानलीला पर गहन समीक्षा की गई है।

जब छत्तीसगढ़ दानलीला सर्वप्रथम प्रकाशित हुई थी, तब उस पर अपनी राय व्यक्त करते हुये राय बहादुर हीरालाल ने लिखा था -"जउने हर ऐला बनाइस है तऊने हर नाम कमाइस है" उनका यह कथन सर्वथा सार्थक है क्योंकि भविष्य में जब भी छत्तीसगढ़ी भाषा का साहित्य लिखा जायेगा। इस दान लीला का कर्त्ता पं. सुन्दर लाल शर्मा छत्तीसगढ़ी भाषा के प्रथम कवि माने जायेंगे।

हिन्दी के लब्ध प्रसिद्ध साहित्यकार पं. माधव राव सप्रे ने इस ग्रंथ की प्रशंसा करते हुए लिखते हैं कि - 1717-1917 को उन्होंने एक पत्र में लिखा कि मुझे विश्वास है कि भगवान श्री कृष्ण चन्द्र की लीला के द्वारा मेरे छत्तीसगढ़ निवासी भाइयों का अवश्य कुछ सुधार होगा। मेरी आशा और भी दृढ़ हो जाती है जब मैं देखता हूँ कि छत्तीसगढ़ निवासी भाइयों में आपकी इस पुस्तक का कैसा लोकोत्तर आदर है।

अप्रकाशित छत्तीसगढ़ी रामायण के प्रणयन के कारण डॉ. नरेन्द्र देव वर्मा- "पं. सुन्दर लाल शर्मा को छत्तीसगढ़ का महाकवि माना है।"

श्री दयाशंकर शुक्ल ने छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य का अध्ययन नामक पुस्तक में इस विचार का समर्थन किया है। गोकुल प्रसाद ने रायपुर रश्मि में यह विचार व्यक्त किया है कि मैं श्री शर्मा जी की दानलीला को छत्तीसगढ़ी भाषा का प्रथम पद्यात्मक ग्रंथ है।

छत्तीसगढ़ की माटी के लिए उसके आचार विचार संस्कृति एवं भाषा के लिए अंचल के दलित पीड़ित शोषित लोगों के प्रति स्व. पंडित शर्मा के हृदय में अटूट अनुराग था। छत्तीसगढ़ी दान लीला जब 1912 में प्रकाशित हुई तब उसके अंतिम पृष्ठ में लिखा था - ''यह पुस्तक छत्तीसगढ़ प्रांत की सभी दुकानों में हमेशा बिकने को तैयार मिलती है। उनके मन में तभी से एक संकल्प था कि इस अंचल के लोगों का अपना एक प्रांत हो उसकी एक भाषा हो इसी भावना से प्रेरित कवि ने छत्तीसगढ़ी में अनुपम काव्य ''छत्तीसगढ़ी दाल लीला'' की रचना की।''

डॉ. नरेन्द्र देव वर्मा लिखते हैं कि - ''छत्तीसगढ़ी भाषा में उनकी दानलीला की वजन की कोई चीज आज तक नहीं लिखी जा सकी। यदि भाषा, भाव और विषय प्रतिपादन की दृष्टि से छत्तीसगढ़ी दानलीला को प्रतिमान मानकर आधुनिक लेखकों की छत्तीसगढ़ी रचनाओं पर दृष्टिपात किया जाए तो वे हमें अत्यधिक निराश करेगी तथा बहुत ककवि ऐसे होंगे जिन्हें हम कवि के रूप में स्वीकार नहीं कर सकेंगे। छत्तीसगढ़ी दानलीला में ही अनेक ऐसे भावोद्वेलनकारी और मनोहारी प्रसंग है, जो भाषा के अर्थ बहुत ही गंभीर क्षमता को प्रकट करते हैं। मिलनोत्सुक गोपिकाओं का कृष्ण के प्रति यह उपालम्य अत्यंक सटीक और हृदयग्राही बन पड़ा है।''

डॉ. सुधीर शर्मा
प्रभारी, विश्वविद्यालय मुद्रणालय

पं. सुन्दर लाल शर्मा : एक महान तपस्वी

हरि ठाकुर

स्वाधीनता संग्राम के कुछ ऐसे भी सेनानी थे जो मूलत: साहित्यकार थे किन्तु भारत माता को दासता की बेड़ियों से मुक्त करने के लिए उन्होंने साहित्य सेवा से बढ़ कर देश सेवा और आजादी के आन्दोलन को महत्व दिया। पं. माधव राव सप्रे, पं. सुन्दरलाल शर्मा, पं. रामदयाल तिवारी, यति यतनलाल, यदुनन्दन प्रसाद श्रीवास्तव आदि इसी श्रेणी के साहित्यकार थे। सन् १८५७ के पश्चात भारतीय राजनीति तथा राष्ट्रीय जागरण का कार्य वस्तुत: महान साहित्यकारों तथा धुरंधर विद्वानों ने ही किया। गोखले, तिलक, लाजपत राय, रमेश चंद्रदत्त, अरविंद घोष आदि आजादी के आन्दोलन के अग्रदूतों ने राजनीति में सक्रिय रहते हुए भी गंभीर लेखन का महत्वपूर्ण कार्य किया।

पं. सुन्दरलाल शर्मा राजनीति में सन् १९०५-६ में सक्रिय हुए। उसके पूर्व वे पूर्णत: साहित्य को समर्पित थे। सन् १९०० के पूर्व राजिम साहित्यिक गतिविधियों का केन्द्र था। विश्वनाथ प्रसाद दुबे, ठा. दामोदर सिंह वर्मा, प्यारेसिंह वर्मा पुजारी, ठा. सूर्यादय सिंह वर्मा, क्षेमू प्रसाद शर्मा, गजाधर प्रसाद पौराणिक, प्यारेलाल दीक्षित आदि उस समय के प्रतिष्ठित कवि थे। ये सब राजिम निवासी थे। उस युग के संत कवि ठाकुर भोला सिंह भी फिंगेश्वर में दीवान होकर पहुँच गये थे। वे भी राजिम की गोष्ठियों में सम्मिलित होने लगे। सन् १८९६-९७ में 'राजिम कवि सभा' का निर्माण हुआ। पं. सुन्दरलाल शर्मा उसके मंत्री नियुक्त हुए। उस समय उनकी आयु मात्र १७ वर्ष की थी।

पं. सुन्दरलाल शर्मा का जन्म पौष अमावस्या विक्रम संवत् १९३८ (सन् १८८१) को ग्राम चमसुर में हुआ था। उनके पिता पं. जयलाल प्रसाद त्रिपाठी समृद्ध मालगुजार थे। पं. सुन्दरलाल शर्मा की प्रारंभिक शिक्षा राजिम में हुई। प्राथमिक शिक्षा के पश्चात उन्होंने घर में ही अंग्रेजी, संस्कृत, बंगला, मराठी,

उड़िया भाषाओं का अध्ययन किया। उनके घर में मराठा-केसरी तथा बंगला पत्र-पत्रिकाएं आती थीं। उनके लेखों को पढ़ कर उनमें भी साहित्यिक रुचि जाग्रत हुई।

बाल्यकाल से ही शर्माजी में नाट्य कला, मूर्तिकला तथा चित्रकला में रुचि थी। किन्तु, उनकी प्रतिभा का विकास मुख्य रूप से साहित्य के क्षेत्र में हुआ। सन् १८९८ में उनकी कुछ कविताएँ ''रसिक मित्र'' कानपुर से प्रकाशित हुईं। इसे हम उनके जीवन की प्रथम प्रकाशित रचना मान सकते हैं -

यह पंथ विकट दिगन्त मत तकु अनत सुन खल तन धरें।
गति दमत चहुँ रन विशेष लागत कुमल जड़ सर्वस हरै॥
प्रिय रमन बच भागहुँ तनक करु धरम कुमति जलाय कै॥
हिय पूरि आस कुरि पुन हति रहू राम पहँ लपटाय कै॥

(रसिक मित्र, पृ. १५, सन् १८९८)

पं. सुन्दरलाल शर्मा ने छन्दों का गहन अध्ययन किया था। वे पिंगल शास्त्र के पण्डित थे। वार्णिक छंदों का उन्हें अच्छा अभ्यास था। शर्मा जी ने ब्रज भाषा, खड़ी बोली तथा छत्तीसगढ़ी तीनों भाषाओं में रचनाएँ कीं। गद्य तथा पद्य-दोनों में उनकी समान गति थी। किन्तु, उनकी ख्याति कवि के रूप में ही अधिक हुई। उन्होंने २२ ग्रन्थों की रचना की है जिनकी सूची इस प्रकार है -

		रचना काल
१.	राजिम प्रेम पियूष (काव्य)	संवत् १९५१
२.	विक्टोरिया वियोग (काव्य)	सं. १९५८
३.	विक्रम शशि कला (नाटक)	सं. १९५९
४.	सीता-परिणय (नाटक)	सं. १९५९
५.	रघुराज गुण कीर्तन (काव्य)	सं. १९५९
६.	करुणा पचीसी (भक्ति काव्य)	सं. १९५९
७.	छत्तीसगढ़ी दानलीला (छत्तीसगढ़ी प्रबंध काव्य)	सं. १९६०

८.	कवि विश्वनाथ प्रसाद (जीवनी)	सं. १९६१
९.	प्रहलाद चरित्र (नाटक)	सं. १९६२
१०.	पार्वती परिणय (नाटक)	सं. १९६२
११.	सच्चा सरदार (उपन्यास)	सं. १९६५
१२.	ध्रुव चरित्र आख्यान (संगीत आख्यान)	सं. १९६५
१३.	उल्लू उदार (उपन्यास)	सं. १९६५
१४.	कंस वध (छत्तीसगढ़ी प्रबंध काव्य)	सं. १९६७
१५.	रामायण बालकाण्ड (छत्तीसगढ़ी में)	सं. १९६८
१६.	राजिम क्षेत्र माहात्म्य	सं. १९६९
१७.	श्रीकृष्ण जन्म आख्यान	
१८.	काव्यामृत वार्षिणी	
१९.	स्फुट पद्य संग्रह	रचना तिथि अज्ञात
२०.	प्रलाप पदावली (भजन संग्रह)	
२१.	सतनामी भजन माला	
२२.	सद्‌गुरु वाणी	

उपर्युक्त बाइस ग्रन्थों में से (१) श्री राजिम क्षेत्र माहात्म्य (२) श्री प्रहलाद चरित्र नाटक (३) श्री ध्रुव चरित्र आख्यान (४) करुणा पचीसी (५) विक्टोरिया वियोग (६) श्री रघुराज गुण कीर्तन (७) प्रलाप पदावली (भजन संग्रह) (८) छत्तीसगढ़ी दानलीला (९) सतनामी भजन माला पं. सुन्दरलाल शर्मा की प्रकाशित कृतियाँ हैं। शेष अप्रकाशित हैं।

पं. सुन्दरलाल शर्मा की कृतियों की सूची से स्पष्ट है कि उन्होने चार नाटक, दो उपन्यास, एक जीवनी, छत्तीसगढ़ी में तीन प्रबंध काव्य, दो संगीत आख्यान लिखे। उनका सम्पूर्ण लेखन काल सन् १८९८ से १९१२ तक था। इन पन्द्रह वर्षों में उन्होने २२ ग्रन्थों का सृजन कर अपनी अद्‌भुत काव्य-प्रतिभा का परिचय दिया। उनकी काव्य प्रतिभा की एक झलक प्रस्तुत करने के लिए करुणा

पचीसी के कुछ पद पर्याप्त हैं -

तब तो गजेन्द्र काज दँउरि पयादे पाँय
दौरत दया के खानि वाहन निवारे हौ ।
सुन्दर सुकवि द्रौपदी की लाज राखिबे को
कहुँ पीत पट कहुँ क्रीट फेंक डारे हौ ।।
कान में भनक कछु तनक सुदामै कर
परत बिहाल ह्वै के सुरत बिसारे हौ ।।
सोई भगवान हौ कि कोऊ और नयो हो आप
करुणा निधान धौं सुभाव फेर डारे हौ ।।

कैसे ह्वै हो नाग तें बचाये नन्दराज जू को
कैसे दुख द्वन्द्व दावानल के अहारी हो ।
सुन्दर सुकवि परतीत होत नाहीं नेक
कैसे द्रौपदी कधौं सके बढ़ाय सारी हौ ।
कैसे शम्भू जू के चाप कौतुक उठाये आप
कौन बल ते धौं आप सकट प्रहारी हो ।
रंचक हमारे जो पै बोझ न उठाय जात
तुम ही बताओ अरे ! कैसे गिरिधारी हौ ?

करत न ध्यान दान देत ना गरीबन को
अति ही उजड्ड बेबकूफन को सरनाम ।
सुन्दर सुकवि योग यज्ञ को चलावैं कौन
भूल सपनेहु नहिं लेत है तिहारो नाम ।।
ज्यों त्यों करि पेट परिवारन को पालिबो औ
गप्प सप्प करिबो ही रात दिन जा के काम ।

व्याध कैसी बाप, अजामिल कैसो आजा हाय।

ऐसे महापातकी को कैसे अपनैहों राम ?

करुणा पचीसी में ऐसे पचीस छंद हैं। वस्तुतः पं. सुन्दर लाल शर्मा की यह विनय-पत्रिका है। करुणा पचीसी में उनके काव्य व्यक्तित्व का अत्यंत सात्विक उत्कर्ष है। स्वाधीनता संग्राम सेनानी और प्रखर राजनेता होने के कारण पं. सुन्दरलाल शर्मा के साहित्य के समुचित मूल्यांकन की ओर किसी का ध्यान नहीं गया अथवा जानबूझ कर उपेक्षा की गई। कविताओं में वे सुन्दर कवि उपनाम का प्रयोग करते थे। कुछ स्थानों पर 'द्विजराज' उपनाम भी मिलता है।

श्री ध्रुव चरित्र आख्यान को हम संगीत रूपक कह सकते हैं। इस छोटी सी पुस्तिका में उन्होंने शिखरणी, दोहा, छप्पय, सवैया, उड़ियाना, भुजंग प्रयात, बसंततिलका, तोटक, बनजारा, मन्दाक्रांता आदि छन्दों का प्रयोग कर यह सिद्ध कर दिया है कि पिंगल शास्त्र का उन्हें गहन अध्ययन तथा अभ्यास था। इस पुस्तक में भजन और लावनी शैली के गीत भी हैं।

कवि के रूप में पं. सुन्दरलाल शर्मा को ख्याति उनकी छत्तीसगढ़ी कृति 'छत्तीसगढ़ी दानलीला' से मिली। इस प्रबंध काव्य की रचना उन्होंने सन् १९०३ में की थी किन्तु प्रकाशित बहुत बाद में हुई। यह छत्तीसगढ़ी भाषा का प्रथम प्रबन्ध काव्य है। इसकी कथा श्रीमद्भागवत् के दशम स्कंध पर आधारित है। श्री कृष्ण की बाल लीलाा का एक अंश इस ग्रन्थ में काव्य रूप में प्रस्तुत है। श्रीकृष्ण गोपियों के साथ जो लीला करते हैं, उसका बड़ा मोहक वर्णन है। मैं इसे छत्तीसगढ़ी के उच्चकोटि के काव्य ग्रन्थों की श्रेणी में स्थान देता हूँ। छत्तीसगढ़ी दानलीला में भाव चमत्कार देखने लायक है। एक उदाहरण प्रस्तुत है -

आज अरे ठौंका पहुँचायेव। गंज दिनां में मैं सपड़ायेंव॥

बघवा हाथी लादे जाथौ। छच्छा ठेंगवा मोला चुमाथौ॥

आनी बानी माल रखे हौ। कुच्छू नइए अइसम कहिथौ॥

तुम्हीं बतावौ कइसे बनिहै। थोरिक हो तो कोनो मनिहै॥

मोती केरा कँवल लदायेव। हँडुला सोन अतेक गढ़ायेव ।।

तेमा फेर समुद राखे हौ । पंडकी अउर परेवा है हो ।।

कुन्दरू दरमी धनुवा लायेव। सूरुज चंदा घलो लदायेव ।।

साँप घलाय सबो पोसे हो। सबो जगात आज मोर दे हौ ।।

श्याम गोपियों से कहते है कि पहले जगात दो, फिर आगे बढ़ना। तुम लोगों ने बाघ, हाथी लाद रखा है। मुझे अंगूठा दिखा कर आगे नहीं बढ़ सकते। तुमने किसम किसम के माल रखे हैं । उस पर कुछ नहीं है, ऐसा कहती हो। यह नहीं चलेगा। थोड़ा बहुत माल होता तो छोड़ देता। मोती, केला, कमल के फूल रखे हुए हो, सोने के कलश हैं समुन्द्र है, पड़की और कबूतर है, कुंदरू और अनार है, सूरज और चन्द्रमा है , साँप भी पाल रखा है। इतना माल रखकर भी बिना जगात पटाये चली जाना चाहती हो।

गोपियाँ श्याम का आरोप सुन कर आश्चर्य में पड़ जाती है। वे पूछती हैं -

''बघवा बन में रहिथें गोई। तेला भला पकरथे कोई ?

तौनोला हम मेर बताथै। कइसे कइसे के डेरूबाथै ?

हाथी ला हम कहाँ लुकायेन ? हंडुला सोन कहां ले पायेन ?

कोनो समुद्र लालाये सकथै ? तेला भला कहाँ ले रखथै ?

चंदा सुरुज सरग में होथै । तेला कैसे इहाँ घटोयै?

कुंदरू दरमी कहाँ लदायेन ? पंड की सुवा कहाँ टरकायेन ?

मोती केरा कँवल कहाँ है ? तभ्भे बनिहै जभे देखाहै ।।

कइसे कइसे के गोठियाथै ? हमला कमठा तीर बताथै ।।

बिखहर साँप कहाँ पहुँचायेन ? तेला हम कइसे के लायेन ?

काव्य की दृष्टि से 'छत्तीसगढ़ी दानलीला' का अपना महत्व है। रूपक और उपमाओं का कोश है। छत्तीसगढ़ी मुहावरों तथा उक्तियों का भी सुन्दर

उपयोग हुआ है, यथा ''सुइन मेर पेट नइ लुकाय, ठेंगवा चुमाना, भिंभोरा फोर के जनमिन, तुम्हार जोहर हो जातिस, लाहो लेना, अंगरी फोरना, छाती सालना, रसदा चलत में ओरझत हे आदि। एक दोहा देखिए -

चौके रहेव अघात तुम छेंवट आयेव ठाँव।

कतको हिरना कूदि है, परिहे भुंय्या पाँव॥

श्याम गोपियों से कहते हैं - अब रास्ते पर आई। हिरन कितनी भी चौकड़ी भरे, आखिर भूमि पर पाँव तो रखेगा ही। ऐसी अनूठी उक्तियों से यह कृति भरी पड़ी है -

दानलीला श्रृंगार रस प्रधान ग्रंथ है किन्तु उसका पर्यवसान शांत रस में हुआ है -

अपन भगत खातिर भगवाना। करथै चरित अनेक विधाना॥

जेखर जइ सन भाव रथै मन। तेला तइसन मिलथै मोहन॥

सन् १९०६ में सूरत कांग्रेस से लौटने के पश्चात पं. सुन्दरलाल शर्मा ने अपना सारा समय और पूँजी स्वदेशी आन्दोलन में लगा दी। परिणामतः उनके दो गाँव बिक गये और वे हजारों रुपयों के कर्ज से लद गये। इसके पश्चात वे देश-सेवा में ऐसे लीन हुए कि साहित्य सेवा और ईश्वर सेवा को भी भूल गये। मातृभूमि की सेवा ही उनके लिए ईश्वर सेवा थी। उन्होने अछूतोद्धार के क्षेत्र में क्रांतिकारी कार्य किए। इस कार्य के लिए ब्राह्मण वर्ग का उन्हें कोप भाजन बनना पड़ा, अपमान सहने पड़े। महात्मा गांधी ने अछूतोद्धार के क्षेत्र में उन्हें अपना गुरु माना था।

सन् १९२२ में उन्हें असहयोग आन्दोलन के सिलसिले में एक वर्ष की जेल की सजा हुई। उनकी साहित्यिक प्रवृत्ति जेल-जीवन में पुनः जाग्रत हुई। जेल में वे 'श्रीकृष्ण जन्म-स्थान पत्रिका' हस्तलिखित निकालते थे। प्रत्येक अंक में १८ से २० पृष्ठ होते थे। मुखपृष्ठ पर उन्हीं का बनाया हुआ चित्र होता

था। जब वे जेल में थे तब कांग्रेस के कुछ नेता 'कौंसिल प्रवेश' का आन्दोलन चला रहे थे। महात्मा गांधी ने इसका विरोध किया था। पं. सुन्दरलाल शर्मा भी कौंसिल प्रवेश के विरोधी थे। अपने विरोध को उन्होंने इन शब्दों में प्रकट किया था -

"देख देख खुश हो रहे, कौंसिल का प्रस्ताव
प्लीडर लीडर लोग जो, दे मूँछों पर ताव।
मजा है यार, उड़ेंगे गुलछर्रे॥
जेल-जाल का डर नहीं, चमकेगा रुजगार
कूद-नाच नेता बड़े, बनने से दरकार।
भलो हो दास, करोड़ बरस जीवैं॥
पड़े जेल सड़ते रहे, नेता लाख हजार
कौंसिल की कुर्सी मिली, होगा बेड़ा पार
रेजुलेशन ले चट पट धर धमके॥

पं. सुन्दरलाल शर्मा अभिजात्य वर्ग के नेतृत्व को खोखला और आडम्बर युक्त समझते थे। जीवन भर उन्होंने अभिजात्य वर्ग के नेतृत्व के खिलाफ संघर्ष किया और संघर्ष करते करते मर गये।

उनका जीवन त्याग और तपस्या का जीवन था। आजादी का आन्दोलन जितना प्रखर होता गया, पं. सुन्दरलाल शर्मा का काव्य-स्रोत सूखता चला गया। बार बार जेल जाने, आन्दोलनों का नेतृत्व करने तथा अछूतोद्धार जैसे कार्यों में सक्रिय रहने के कारण साहित्य सृजन के लिए उनके पास अवकाश नहीं था। सन् १८९३ से १९१२ तक उन्होंने २२ ग्रन्थों की रचना की। उसके पश्चाात उन्होंने साहित्य से सन्यास ले लिया। दिनांक २८-१२-१९४० को इस महान स्वतंत्रता सेनानी, अक्खड़ संत और उद्भट कवि का निधन हो गया।

●●●

छत्तीसगढ़ी दानलीला

जै राजीव लोचन बबा ॥

(सब ले आगू देवता संउरे के मड़वना)

दोहा

जगदिश्वर के पांव में, आपन मूड़ नवाय ॥
सिरी कृष्ण भगवान के, कहि हौं चरित सुनाय ॥१॥

पंचगोठ

मन में मन तो मिल गइस, आंखी रहिस समाय ॥
मया फन्द में राधिका, मछरी अस तड़फाय ॥२॥

राधागोंठ

जा दिन ले नन्दलाल ला, ठाड़े देखेंव खोर ॥
कांहीं नहीं सुहावै, गोई ! किरिया तोर ॥३॥

सवैया

सुन आज मुहाटी में-ठाढ़े रहेंव, बेटवा जसुदा तहं आइस ओ ॥
हँस के मोला देख भऊं टेंड़गा, कर के मुँह ला बिचकाइस ओ ॥
तव दौंर पोटार निकार के लाज, धरेंव मूड़ा छोड़ पराइस ओ ॥
खरिखा के-तनी-वो धनी लरिका, ठेंगवा मोला आज बताइस ओ ॥

दोहा

खरिखा-में लरिका लिये, देखेंव नन्द किशोर ॥
चरखा सरिखा तभिच-ले, गिंजरत है मन-मोर ॥५॥

कोनों जतन लगाय के, देते श्याम मिलाय ॥
धोकर धोकर के रात दिन, परतेंव तोरेच पांय ॥६॥

त्रोटक छन्द

जब ले सपना मैं निहारंव-ओ। तव ले मिलकी नइ मारव ओ ॥
दिन रात मोला हयरान करै। दुखहाई ये दाई ! जवानी जरै ॥
मैं गोई ! अब कोन उपाय करा। के कहूं दहरा बिच बूड़ मरौं ॥
मोला कोनों उपाय-नइ सूझत है। ये गोई गोदना अस गूदत है ॥
जब ले वोला मूड़में मौर धरे। गर में बने फूल के माला करे ॥
लवड़ी दुहनी कर में लटुका। पहिरे पिंयरा-पिंयरा पटुका ॥
मैं तो जात चले देख पारेंव ओ। वोला कुंज के कोती निहारेंव ओ ॥
तब ले गोई ! मैं बनि गेयेंव बही। थोरको सुरता मोला चेत नहीं ॥
चिटको नइ अन्न सहावै मोला। बिरदान्त में कोन बतावौं तोला ॥
बढ़ के तोला गोई ! बतावा नहीं। थोरको तोर मेर लुकावौं नहीं ॥
हस जानत मोर सुभाव गोई !। कतको दुखहाई बतावै कोई ॥
मिलिके कभू गौकुल जातेन-ओ। मन-के मरजी-ला-बतातेन-ओ ॥
दुख औ सुख-ला गौठियातेन-ओ। घर सांझक-ले-फिर आतेन ओ ॥
धर लेतेन थोरिक दूध-दही। गोंठियाथौं गोई ! मन-आथ नहीं ॥
बेंच देतेन वीर बचातिस तो। कन्हया ला खवातेन खातिस-तो ॥
लेवना बने लाल ला -देतेन वो। लाहो-ला-जिनगी के ले लेतेन वो ॥
करेजा में खड़ीर-के नातेन-वो। मुँह देखत में सुख पातेन-वो ॥
नन्द गौंटिया-के बटवा-हर-ओ। मोर आइस आंखिन-के-तर-ओ ॥
तब ले चिटको नइ भूलत है। मोर आंखिच आंखी-में झूलत है ॥
जब कान उटेर लगाथों ओ। घुंघरू के कभू गम पाथंव-ओ ! ॥

जब झक्क ले आगू निहारथौं ओ। दहि चोर ला-मैं देख पारथों ॥
मन ही मन में लगथै डर-ओ। हरि देइस मोल, कुछू कर ओ ॥
मन मोर चोराय सु लेइस है। मोहनी कुछु थोप-धौं देइस है ॥
कोन जानथै जो कुछु जाहै होई। ये जवानी ला कइसे निभाहौं गोई ॥

दोहा

देखे बिन नन्दलाल के, अब तो नइ रहि जाय ॥
जात सगा डर छांड़ के ; धरिहौं मोहन पांय ॥१॥
चलो आज चलबो गोई ! वृन्दावन के बाट ॥
दही बेंचबो जाय के ; मथुरा जी के घाट ॥

पंचगोंठ

ललिता औ चन्द्रावली ; सुन प्यारी के बात ॥
चलो चलो चलिबो गोई ! कहि के पकरिन हांत ॥

चौपाई

जतका-दूध-दही-अउ-लेना। जोर-जोर के दुधहा जेवना ॥
मोलहा-खोपला-चुकिया-राखिन। तउला ला जोरिन हैं सबझिन ॥
दुहना-टुकना-बीच मड़ाइन। घर घर ले निकलिन रौताइन ॥
एक जंवरिहा रहिन सबे ठिक। दौंरी में फांदै के - लाइक ॥
कोनों ढोंगी कोनो बुटरी। चकरेट्ठी दीख जस पुतरी ॥
ऐन जवानी उठती सब-के। पन्द्रा सोला बीस बरस के ॥
काजर आंजे अंलगा डारे। मूड़ कोराये पाटी पारे ॥
पांव रचाये बीरा खाये। तरुवा-में टिकली चटकाय ॥
बड़का टेंड़गा खोपा-पारे। गोंदा खोंचे गजरा डारे ॥

नगता लाली मांग लगाये। बेनी-में फुन्दरी लटकाये ॥
कोनों हैं झाबा गंथवाये। कोनो जुच्छा बिना कोराये ॥
भुतही मन अस रेंगत जावैं। उड़ उड़ चुन्दी मुँह में- आवैं ॥
पहिरे रंग-रंग-के गहना। ठलहा कोनो अड्ग रहे ना ॥
कोनों पैरी चूरा जोंड़ा। कोनो गंठिया कोनो तोड़ा ॥
कोनो ला घुंघरू बस-भावै। छुमछुम छुमछुम बाजत जावै ॥
खनर खनर चूरी सब बाजै। खुल के ककनी हाथ बिराजै ॥
पहिरे बहुंटा और पछेला। जेखर रहिस सौख है जेला ॥
बिल्लोरी चूरी हलवाही। रत्तन-पिंउरी औ टिकलाहीं ॥
कोनो छुच्छा लाख बंधाये। पिंउरा पटली ला झमकाये ॥
पहिरे हैं हरियर धूपाही। कोनो छुटुवा कोनो पटाही ॥

दोहा

करधन कंवरपटा पहिर, रेंगत हाथी चाल ॥
जेमा ओरमत जात हैं, मोती हीरा लाल ॥

चौपाई

चांदी के सूता झमकाये। गोदना ठांव ठांव गोदवाये ॥
दुलरी तिलरी कटवा मोहैं। औ कदमाहीं सुर्रा सोहैं ॥
पुतरी अउर जुगजुगी माला। रूपस मुंगिया पोत विशाला ॥
हीरा लाल जड़ाये मुंदरी। सब झन चक-चक पहिरे अंगरी ॥
पहिरे परछहा देवराही। छिनी अंगुरिया-अउ अंगुठाही ॥
खोटिला तितरी ढार विराजैं। खिलवां-तरकी कानन राजैं ॥
तेखर खाले झुमका भूलै। देखत-डउकन-के दिल भूलै ॥
नाकन में सुन्दर नथ हालै। नहि कोउ अउठ तोला के खालै ॥
कोनो तिरैंया पांव रचाये। लाल महाउर कोनो देबाये ॥

चुटकी चुटका गोड़ सुहावै। चुटचुट चुटचुट बाजत जावै ॥
कोनो अनवट बिछिया दोनो। दंग दंग ले छुच्छा-हैं-कोनो ॥
रांड़ी समझैं पांव निहारै। ऊपर एंहवांती मुँह मारैं ॥
दांतन परती लाख लगाये। कोनो मीसी ला झमकाये ॥
एक एक के धरे हाथ हैं। गिजगिज गिजगिज करत जात हैं ॥
एक दोय हो तो-कहि जावै। अटाट टू ला-कउन बतावै ॥
पहिरे लूगा लाली पिंयरा। देखत में मोहत हैं जियरा ॥
डोरिया पातल सारि अंचरहा। मेघी चुनरी कोर-लपरहा ॥
मुंडा ढिंक के सोरा हंत्थी। पहिरे रेंगत हैं एक संत्थी ॥
हलबिन पाटा तिरनी मोरे। कोनो थड़ अंचरा हैं जोरे ॥
कोनो कोनो डेरी खंधला। कोनो लिये जेवनी केला ॥
लड़िहा-सूरज-के-रफ-पावै। चकमक चकमक चमकत जावै ॥
औ पहिरे रेशमाही चोली। करत जात हैं ठोली बोली ॥
चिमटैं-मसकैं भरे जवानी। होत जात हैं गिद्ध मसानी ॥
कोनो तो मुड़ उघरा जावैं। छाती ओढ़ना कोनो गिरावें ॥
कोनो-के लुगरा खिंच लेवै। गुदगुदाय कोनो ला-देवैं ॥
नथ उठाय के पाछू-झूकै। और फेर कोनो पिचले थूंकैं ॥
कोनो हांसैं कोनो हंसावैं। टेंड़गा देखैं मुँह बिचकावैं ॥

दोहा

पँडरी पँडरी देंह के, रूपस सबे अघात।
श्याम मिले के खुशी में, फसफसात हैं जात ॥
भिरिन कछोरा सबो झन, बस्ती बाहिर आय।
उघरे उघरे जांघ हर, केंरा असन देखाय ॥

चौपाई

करे सवांग सबो टूरी मन। चलैं छनाक छनाक सबो-झन ॥
कर-हियाव कोनो गोंठियावैं। डरपोकनी मन बीच डेरावैं ॥
उरभट भेंट कहूं जो-होई। तब तो कैसे करबो गोई ॥
संगी लिये अगाड़ी आहैं। मोहन ठौंका दही नगाहैं ॥
कोनो कह पकर हम लेबो। लाल गाल में गुलचा देबो ॥
आगू कर लेबो मन भाई। फेर ले जाबो जसुदा ठांई ॥
कोनो कुछ करौ तुम कोई। हरि ला जो पहुंचातेंव गोई ॥
दौरत पांव बीच गिर जातेंव। देखथ रहितेंव नयन जुड़ातेंव ॥
एको घरी छोड़तेंव नाहीं। रहितेंव बैठ-न करतेंव कांही ॥
माखन गोरस दही खवातेंव। किरिया ! तोर कहूं जो पातेंव ॥
ऐसन ऐसन करत विचारा। बिन्द्राबन में पहुंचिन झारा ॥
ओक कोती कान्हा हैं ठाड़े। लइका मन-ला-लिये अगाड़े ॥
माथे मौर लहरिया पागा। खौर चन्दन करे सँवागा ॥
पहिरे हैं मजुराही साजू। ओरमें हवै फूंदना बाजू ॥
खुल के पीताम्बरी सुहावैं। लौठी देखत लोग मोहावें ॥
भदई अउर पैंजनी सोहै। कहै सुंदरइ ऐसन को-है ॥
मोहन देख परत हैं ऐसे। खासा चेलिक डौका जैसे ॥
मुसकी ढारत झारत रज-कन। बोले लगिन श्याम-संगी सन ॥
एक मनसुभा है रे भाई ! आज चलो दहि दूध नगाई ॥

दोहा

मन तुम्हार जो आतिस, खातेन लेवना-लूट।
लेतेन यार जगात सब, रौताइन - के जूट॥

चौपाई

सुनत कान लूटब दहि दूदे। हो !हो ! करके लइका कूदे ॥
ठौंका बनिहै हरि संग जाबो। चलौ अरे ! दहि माखन खाबो ॥
ऐसन कहि कहि कूदैं नाचैं। एक बतावैं एके टांचैं ॥
कहे श्याम तब सुनौ रे भाई। सब झन चढ़ौ रूख में जाई ॥
तुमला जब मैं करौं इशारा। कूद-कूद आहौ तब झारा ॥
ऐसे हँस के कृष्ण कहनि जब। येते वोते सखा चढ़िन सब ॥
आगू ठाढ़ भइन हरि जाके। लौठी लिये हाँथ परसा के ॥
वोती ले आइन रौताइन। श्याम देख डगडग ले पाइन ॥
झर फर सबो कछोरा छोरिन। ढाँकिन मूड़-बाँह ला तोपिन ॥
ठोठक गइन सब हरि ला देखे। कोंचकन लगिन एक ला एके ॥
रेंगे बर आगू में होके। परिस हियाव नहीं कोनो के ॥
ले दे-के सब चलिन अगारी। सब ले चतुरी राधा प्यारी ॥
दू-पग-चलैं ठोठक फिर जावै। मन में मया उपर डर खावै ॥

दोहा

सामहू-में सूंटी लिये, ठाढ़ भइन हरि आय।
आगू मोर जगात दे, पाछू पाहौ जाय ॥

रौज रोज चोरी कर जावौ। मोला नहीं जगात पटावौ ॥
ठौंका आज पकर मैं पायेंव। जातेव भाग तैसने आयेंव ॥
तुमला आज जान तब देहौं। जब सब दिन के सेती लेहौं ॥
रोज बिहिनिया मथुरा जाथौ। रात भये ले गोकुल आथौ ॥
भल मानुख के बेटी हौके। काम करत हौ चोर पनेके ॥
रौताइन सब सुन-रिसाइन। कब ले श्याम साव बन-आइन ॥

चोरी करत उमर सब मेले। भयेव बड़े मोहन छोटे ले ।।
तउन आज ऐसन बोलत हौ। चोट्टी कहि हम ला ठोलत हौ ।।
चोर तुम्हारे ऐल्हे पैल्हे। अउ तुम चोर चोर के चेले ।।
काल चोराय जो माखन खाये। आजेच मोहन गयेव भुलाये ।।
मूसर में जब बाँधिस लाके। तव हम सबो छोड़ायेन जाके ।।
काले रोयेव अभी भुलायेव। आजेच भोंग चन्द बन आयेव ।।

चौपाई

चाहे भलुक मांगके खावौ। आवा ! बइठौ ! दोना लावौ !
नाम जगात बूंद नइ पाहौ। आखिर चुचवावत रहि जाहौ ।।
ऐसे सुनत श्याम मुसकाइन। थोरिक आंखी मार बताइन ।।
चिटिक मुलाजा नइ छू जाथै। मुँह में कथौ, जैसने आथै ।।
हंड़िया के मुँह में परई दै। मनखे के मुँह में काला दै ?
मात गये हौ सब मोटियारी। नहिं खियाल मस्ती में भारी ।।
आँय बाँय मनमुखी बकत हौ। भूत धरे अस बात करत हौ ।।
फोकट कौन जीभ पिरवावै। माछी मारै हाथ बसावै ।।
जो मुँह आहै तउन बताहौ। दान दिये बिन जान-न पाहौ ।
आव सबे डूमर कस किरवा। का जानौ ? तुम दूसर विरवा ।।
एक कंस ला तुम सुन पायेव। आपन भर औखाद बताथेव ।।
टेटका के पहुंचान कहां ले ? भांड़ी बारी तीर जहां ले ।।

दोहा

पिरथी सरग पताल औ, चन्दा सुरुज लगाय।
तीन लोक चौदा भुवन, राज हमारेच आय ।।

चौपाई

इहां कंस ला कउन डेरावै। ऐसन कंस हजारों आवै ॥
चूंदी धरके अभी पछारौं। चोंगी पियत भरे में मारौं ॥
तेखर डर-मोला डरुवाथौ। मोला लइका जान बताथौ ॥
मैं कैसन लइका हौं तेला। जानत हो लइका-पनकेला ॥
रकसा रकसिन खेलत मारेंव। नाथेंव विखहर सांप-निकारेंव ॥
गोवर्धन पहाड़ उपकायेंव। छिनिया अंगुरी बीच-उठायेंव ॥
ऐसन मैं लैकई दिखावौं। जानत हौ का गुन गोंठियावौं ?
मोला माखन चोर बताथौ। का गुण आपन ऐव लुकाथौ ॥
सुरता है तुम्हला वो दिनके। लुगरा ला-लेके सब झिन-के ॥
बांधेव मैं कदम्ब के डारी। कैसन मजा उड़िस ? तब भारी ॥
नाक रगरके कुनश बजायेव। तब सब आपन लुगरा पायेव ॥

दोहा

सुनके ऐसन बातला, सब झन रहिन लजाय।
आपुसमें लागिन कहे, कैसे कथैं कन्हाय ? ॥

चौपाई

एक कोंचक के एक बतावैं। सब मुचमुच मुच मुच मुसकावैं ॥
देखे गोई ! कहव कन्हाई। निच्चट निल्लज होगै दाई !
बोलत वोला लाज नइ लागै। अभी ले कैसे कलऊ खरागै ?
कहांके कहां जोर चटकाथै। फोकट हमला लाज मराथै ॥
काखर काखर मुँह ला धरिहै। जौने सुनि है हांसी करि है ॥
चार झनाके बीच बताथै। मूँड़ हमार नीच करवाथै ॥
ऐसन दूसर जघा बता है। ठट्ठा भला कौन पतिया है ?

लेतो भला ! बता दे कोई। हरि ला ऐसन चाहिय गोई ? ॥
ऐसे सुनत श्याम मुसकाये। भऊं नचावत आगू आये ॥
सेर बांध चतुरी खोजवायव। नहीं तुम्हार बरोबर पायव ॥
चलि हैं नहि मोर मेर चलाकी। अभी सँउरिहौ दाई काकी ॥
मानो सोझ जगात मड़ा दौ। लेखा करके सबो चुका दौ ॥

दोहा

एकक सबो हिसाब के, कर देव मोर चुकाव।
मंझन होवत जात है, सोझ हँसत घर जाव ॥

चौपाई

नहिं तो फट फट में पर जाहौ। फोकट इज्जत अपन गँवाहौ ॥
देखथ अभी नगा मैं लेहौं। औ फेर सबो हाल कर देहौ ॥
आखिर फेर हाथ का आहै। बात तुम्हार कोन रहि जाहै ? ॥
कीर खींच के कथौं चेता के। मोला किरिया नन्द बबा के ॥
चाहे मूड़ पटक मर जावो। कतको चाहौ हड्ड बड़ावौ ॥
जबले नहीं जगात मड़ाहौ। कैसनो करौ जान न पाहौ ।
ऐसन सुनत सबौ रौताइन। मुँह बिचकाइन और रिसाइन ॥
बिच झाड़ी में सुन्ना पाके। डेरुवावत हौ हम ला आके ॥
लोखन केर उधैया आये। छेंकत बेटी पतो पराये ॥
अभी जाय घर अपन बताथन। लिगरी दू-के-चार लगाथन ॥
तौ फेर श्याम हाल का हो है। हाँसी खेल बात ये नो है ॥

दोहा

टूरी टूरी जान के, मोहन करत अवेर।
घुंचौ ! चलौ ! अब जान दौ, ढरकन लागिस बेर ॥

चौपाई

लहत बिहत के रहब भला अय।	बहुंतों के तपवो हर का अय ? ॥
गाँव गाँव में रथैं गौंटिया।	कोनो ऐसन करथैं ? धीया ॥
जात पाँत में सबो बराबर।	नै अय गोई घाट कोनो हर ॥
दू-कोरी गेरुवा-के मारे।	आँखी भइस बेलन्द तुम्हारे ॥
छी छी करके गाय चरावै।	राजा कहत लाज नइ आवै ? ॥
कमरा औ खुमरी ओढ़े-बर।	बड़े बड़े सांहुंत जोरे बर ॥
ढींग बघारे बर हो जेला।	कहै जौन नइ जानै तेला ॥
हमला कौन बतावै लाला।	जानत हवन तीन पुरखा-ला ॥
तुम तो आव नन्द के बेटा।	जनमे हवौ जसोदा पेटा ॥
गड़े हवै गोकुल में नेरुवा।	घर में है दू कोरी गेरुवा ॥
चोरी कर कर लेवना खायेव।	कहूं बंधायेव कहूं पिटायेव ॥
नइ चोरी में पेट भरिस जव।	श्याम पेंण्डारा परे लगेव तव .॥
जब तुम दिन भर गाय चराथौ।	तब घर में खाये बर पाथौ ॥
सुरता तउन भुला गय मुहना !	कहां गंवायेव नोई दुहना ? ॥
पंड़रा नन्द जशोदा पंड़री।	तुम कैसे हौ करलुठुवा-हरि ?

दोहा

परिस दुकाल-गुपाल जब, हमर राज में आय।
दुइ काठा कोदो बदल तुमला लइन बिसाय ॥

चौपाई

जो राजा हो भला बताथौ। हाथी कहाँ कहाँ ले पाथौ ॥
छता मौर कहाँ तुम डारे। नौकर चाकर कहाँ तुम्हारे ॥
गादी बइठौ चंवर डुलावौ। तौ फेर का गुण गाय चरावो ॥
देखे गाई! आखिर अहिरे। राजा होके भदईं पहिरे ॥
हीरा मोती लाल कहाँ गय? गोंगची पहिरे लाल नहीं लागय।
पीक मजूर लगाये पागा। लाज चिटिक नइ लागै कागा ?॥
फेकौ खुमरी ढट्टा बांधौ। कमरा चीर अंगरखा साधौ ॥
कहिबे संझहा नन्द गौंटिया। देहै एक झिन लगा पहटिया ॥
फबित नहीं आवे थोरको के। ठेंगा पकरे राजा होके ॥
बिन मनखे तनखे बिन बाजा। नेवाई के देखेन राजा ॥
ऐसन सुनत श्याम मुसुकाइन। निधड़क निचट अगाड़ी आइन ॥
सूवा मान पोंष चारिक ठन। रौताइन राखैं घर दूझन ॥

दोहा

कोयली अस बासत हवौ, कहौ न बात विचार।
मुँहु लग्गी हो गये हव, गोकुल के दूचार ॥

चौपाई

तभे सभे मिलकी मारत हौ। तुम मोला निदरे डारत हौ ॥
सुनत ओ! पूछत हौं तोला। कब जन्मत देखे हस मोला ?
कहाँ ले नन्द जसोदा आइन। जनथौ इन्हला कोन बनाइन ?
मही सिरजथौं मही चराथौं। मही जियाथौं मही मराथौं ॥
मोर बिना पाना नइ हालै। आखिर तुम ला कहौं कहाँ ले ॥

पाप अघात भुंया गरुवाइस। मोर मेर रोवत तब आइस ॥
तब मैं मन में मड़ायव। मनखे के चोला धर आयेंव ॥
जमा मनुवा चारी करि हैं। लीला गाहैं सुनि हैं तरि हैं ॥
तेला अड़हा मन-का जानौ ? टेंड़गा सोझहा अपने तानौ ॥
कमरा-के तुम निन्दा करथौ। वही कमरहा पाले परथौ ॥
का जानौ कमरा के गुण ला ? दही औ कपसा एके तुमला ॥
तीन लोक में मैं खोजवायेंव। कमरा के न बरोबर पायेंव ॥
ग्वालिन सुनत कहन अस लागिन। कोन गोठ ला कहाँ निकालिन ?॥

दोहा

अजगुत अजगुत बातला, कोन सुनै मन मार।
कब के उपजे कोलिहा, कब देखे खरिहार ?॥

चौपाई

गोकुल में गोई ? तउन खटावै। मारै मूड़ औ गोड़ बतावै ॥
हमहूँ खार खोजायेन सबरा। नइ पायेन मोहन अस-लबरा ॥
जावौ मोहन तहाँ बतावौ। लबरा जहाँ बरोबर पावौ ॥
कमरा के जो करेव बड़ाई। तौन सबो ठौंका है भाई ! ॥
यही ओढ़ के गाय चरावौ। येखरे घेंघो झड़ी लगावौ ॥
यही ओढ़ के जाड़ बुतावौ। यही ओढ़ के घाम घलावौ ॥
काम परे ले यही डसावौ। येखरे सीसा मूँड़ मड़ावौ ॥
सबो रकम में ये जाथै बन। है कमरा तुम्हार पत राखन ॥
आभा करके कहैं हरी-ला। तुम्हरे कमरा फबै तुम्हीला ॥
करियै देह करिये कमरा हर। जोंड़ी दूनो मिलिस बरोबर ॥
ऐसे कहि के सब रौताइन। तब रेंगे-बर पाँव उठाइन ॥
दँउर लाल आगू ला छकिन। जात कहाँ हौ दान दिये विन ? ॥

दोहा

बिना जगात पटाये , नई पाहौ तुम जाय।
लेहौं अभिच नगाय मैं, जाहौ ठसक भुलाय ॥

चौपाई

सुनके ऐसन बात कन्हाई। सब रौताइन गइन रिसाई ॥
भले बाप के बेटा होवे। तो तैं नइ नगाय बस ! लेबे ॥
ऐसे कहि पेलिन अगुवा मन। चलिन छनाक छनाक सबो झन ॥
दइन हाथ झटकार जोरकर। मोहन गइन उड़ाय कोस भर ॥
झुरमुट करिन श्याम फेर मांगिन। झुमटा झुमटा होवन लागिन ॥
कजिया के ओखी-ला कर के। हरि-ला सबो पोटारें घर-के ॥
कोनो पकरैं कोनो नगावैं। ऐसने ऐसने साध बुतावैं ॥
तब मोहन सुंसरी ला पारिन। हलर हलर हालिन डारी मन ॥
सुंसरी सुनिन जबे संगी मन। धमा धम्म कूदिन सब्बो झन ॥
अक बकाय देखैं रौताइन। जैसे टीड़ी फांफा आइन ॥
कोउ तुंतरू कोउ संख बजाइन। सुनके सब गोहा जुरियाइन ॥

दोहा

कोनो हैं झालर धरे, कोनो हैं घड़ियाल ॥
उत्ता धुर्रा ठोकैं, रन झांझर के चाल ॥

चौपाई

पहिरे पट्टुका ला हैं कोनो। कोनो जंघिया चोलना दोनो ॥
कोनो नीगोटा झमकाये। पूछेली ला हैं ओरमाये ॥

कोंनो टूरा पहिरे साजू। सुन्दर आड़ बन्द है बाजू ॥
जतर कतर फुंदना ओरमाये। लक ठा लकठा में लटकाये ॥
ठांव ठांव-में गूँथे कौड़ी। धरें हांत-में ठेंगा लौठी ॥
पीछू में खुमरी ला बाँधे। पर देखाय ढाल अस खाँधें ॥
ओढ़े कमरा पंड़रा करिहा। झारा टूरा एक जँवरिहा ॥
हो हो करके छेंक लइन तब। ग्वालिन संख उड़ाय गइन सब॥
हत्तुम्हार जौहर हो जातिस। देवी दाई तुमला खातिस ॥
ठौंका चमके हन सब्बो झन। डेरुवा दइन हवैं भडुवा मन ॥
झझकत देखिन सबो सखा जब। हाहा ! हाहा ! हांस दइन सब ॥
चिटिके डेरावौ झन भौजी मन। कोनो चोर पेंडारा नोहन ॥
हरि के सांझ जगात मड़ावौ। सिट सिट करत घर तनी जावौ॥

दोहा

श्याम अकेल्हा जान के, रहे हौ पेलत जात।
अब तो हम सब आ गयेन, करि हौ कउन जुगात ?

चौपाई

चीन्ह लइन टूरा मन-ला जब। चर चर ले अंगरी फोरिन सब॥
कहाँ बसैया कहाँ रहैया ? आयेव भौजी बड़ा कहैया ॥
तोर भाई बइहा ला लातो। देखा केसन हवै देखा तो ॥
ऐसन सुनत सखा मुसकाइन। अंगरी मोहन तनी बताइन ॥
अब दखे भाई बइहा ला। देखन तो ? का करिथौ तेला ॥
है तुम्हारे आगू-में ठाढ़े। डग डग-ले सरई अस बाढ़े ॥
गइन लजाय सुनत सब्बो-झन। बक्का नइ फूटिस एक्को-ठन॥

रिस करके तब मोहन लाला। ठाढ़े भइन रोक रसदा-ला ॥
अब तो जान तभे मैं देहौं। लेखा गतर गतर के लेहौं ॥
गहना गूँठा लादे जाथौ। कभ्भुच नहीं जगात पटाथौ ॥

दोहा

उटका पंची छाँड़ के, देव जगात हमार ॥
अभी तभी लेहौं झटक, रहि जाहौ झकमार ॥

चौपाई

आज अरे ठौंका पहुँचायेंव। गंज दिना में मैं सपड़ायेंव ॥
बघवा हाथी लादे जाथौ। छुच्छा ठेंगवा मोला चुमाथौ ॥
आनी बानी माल रखे हौ। कुच्छू नइये ऐसन कहिहौ ॥
तुम्हीं बतावौ कइसे बनि है ? थोरिक हो तो कोनो मनिहै ॥
मोती केंरा कंवल लदायेव। हंडुला सोन अतेक-गढ़ायेव ॥
तेमा फेर समुद रखे हौ। पंड़की अउर परेवा है हो ॥
कुंदरू दरमी धनुवा-लायेब। सूरज चन्दा घलो लदायेव ॥
साँप घलाय सबो पोषे हौ। सबो जगात आज मोर देहौ ॥
सुनत बात ऐसन रौताइन। अबके सब्बो झन कौवाइन ॥
देखे गोई ! कहा बताथै। कैसे अंढत गंढत गोठियाथे ॥
ऐसन गोंठ फबित नइ आवै। मोहन हमला लाज मरावै ॥

दोहा

सुन पाहैं कोनो कहूँ, तब का हो है हाल ?
आगी-लग-जातिस-अओ ! ऐसन ठट्ठा ख्याल ॥

चौपाई

जानेन चेलिक भइन कन्हाई। तेखरे ये चोचला ऐ-दाई ! ॥
नगरा नगरा फिरत रहिन हैं। आजेच चेलिक कहाँ भइन हैं ? ॥
कौन गुरू मेर कान फुँकाइन ? बड़े डपोर संख बन आइन ॥
दाई ददा ला जे नइ मानै। ते फेर दूसर ला का जानै ?
अजिच गम पायेन सब्बो-झन। फोर भिंभोरा जनमिन मोहन ॥
जनमिन भलुक इखरे पेटी। बेटा नन्द जसोदा बेटी ॥
गंज दिनाके ये बुढ़वा ऐ। मेछा दाढ़ी घलो खियागै ॥
तेला नइ जानत हौ कोई। बुढ़गंडा के तपनी गोई ॥
गहना गूठा पहिरब ओढ़ब। नइ सुहाय जेला हमार जब ॥
कोंचक लेय दूनो आँखी ला। देखे ओ ! अनदेखना के ला ॥
नइ येखर अमाय आँखी-में। सालत हैं एखरो छाती-में ॥
रसदा चलती-में ओरझत है। गहना गूँठा ला उटकत है ॥

दोहा

पहिरब ओढ़ब घला हर, कसके लगिस हमार ॥
जर जातिस ऐसन गोई ! गोकुल के बसवार ॥

चौपाई

बघवा बन-में रहिथै गोई ! तेला भला ! पकरथैं ? कोई ॥
तौनो ला हम मेर बताथै। कइसे कइसे के डेरुवाथै ? ॥
हाथी ला हम कहाँ लुकायेन ? हंडुला सोन कहाँ ले पायेन ? ॥
कोनो समुंद ला लाये सकथै। तेला भला कहाँ ले रखथै ? ॥
चन्दा सुरुज सरग में होथै। कैसे तेला हइां घटोथै ? ॥
कुंदरू दरमी कहाँ लदायेन ? पंड़की सुवा कहाँ टरकायेन ? ॥

मोती केरा कंबल कहाँ है ? । तभ्भे बनि है जभे देखा है ॥
कइसे कइसे के गोंठियाथै ? । हमला कमठा तीर बताथै ॥
विखहर साँप कहाँ पहुँचायेन ?। तेला हम कैसे के लायेन ? ॥
झारा झरती लेय बताहै। नहि तो बात बिगर सब जाहै ॥
बहुँतो हर ऐसनो के-का है। गढ़ गढ़ के सब बात बताहै ॥
मन-के मुखी होयगैं मोहन। कोनो हम्मन मनखे नोहन ॥

दोहा

लेतो भला ! देखाव-तो, तभ्भे बनि है बात ॥
फोकट के नोहै बने, कखरा करबो घात ॥

चौपाई

नीकलिहै तभ्भे तो भरबो। नहि तो फेर जौंहर कर डरवो ॥
सुनत बात मुसकाइन मोहन। हम फोकट कहवैया नो हन ॥
कतको बढ़ बढ़ के गोठियावै। सूइन मेर नइ पेट लुकावै ॥
सब्बो के जगात मड़वाहौं। अभ्भी एकक खोल देखाहौं ॥
केरा जांघ नख्ख है मोती। कहौ बांचि हौ कोनौ कोती ? ॥
कंवल बरोबर हाथ देखाथै। छाती हंडुला सोन लजाथै ॥
बोड़री समुंद हबै पंड़की गर। कुंदरू ओठ दाँत दरमी-कर ॥
सूरज चन्दा मुँह में आहै। टेंड़गा भऊँ अओ ! कमठा है ॥
तुरतुराय मछरी अस आँखी। हैं हमार संगी मन साखी ॥
सूबा चोच नाक ठौके है । साँप सरिक बेणी ओरमे है ॥

दोहा

खात खात सिट्ठाय-गै, दूध दही औ भात।
नइ तेखर संग काम है, लेहौं यही जगात ॥

चौपाई

पातर फूहर गोंठ सुनिन जब। सुचमु च-मुच मुच करे लगिन-सब ॥
कोनो कोनो मुँह बिचकाइन। कोनो भऊँ नचाय पराइन ॥
कोनो गुदगुदाय मुसकावैं। फुसुर फुसुर सब्बो गोंठियावैं ॥
नइ अय कुछू ठिकाना दाई !। सुनै ओ ! कैसे कथैं कन्हाई ? ॥
जान गयेन मनसूभा भइ गय। दूध दही के लालच नइ अय ॥
मात गइन मस्ती में मोहन। गंज बेरी में गम पाये हन ॥
चलो अओ जसुदा मेर जाबो। बेटा-के गुण ला-गोंठियाबो ॥
आज सबो मरजाद अओ ! गै। यही लुवाठ गौंटिया हो-गै ॥
सुन्ना प के हुरमत लेथै। मुँह आथै तौने कहि देथै ॥
कखरौ इज्जत हर नइ बांचै। छुच्छा नगरा हो के नाचै ॥

दोहा

गोकुल-में आवन नहीं, अपटत हवन घलाय।
गाज परै आगी लगै, काले चलब पराय ॥

चौपाई

सबो रकम-में हम-मन हारेन। दही दूध के नाव बिसारेन ॥
धोकर धोकर के पाँव परत हन। दंडा शरण जान दे मोहन ! ॥
डंगनी अकन बेर है वांचिस। भइगे मूड़ा पूर गइस बस ॥
हाहा ! घुंचो अभी रोको-मत। डौकी मन-के कतका इज्जत ॥
डौका जात्त आव तुम दूरा। फूटे बर चूरी ना चूरा ॥
घर-में दाई गारी देहै। बंधवा एकक लेखा लेहैं ॥
तब-का ?ओखी आज बतावो। कब-ले लबरी होय खटावो ॥

सुनत श्याम मुसकान अगारी। आइन पकरे ठेंगा भारी ॥
तुमला कहूँ छोड़ मैं देहौं। राजा मेर फेर-का ? गोंठियेहौं ॥
लेखा जभे मागिहैं मोला। कहाँ ले लान पटाहौं वोला ॥
ऐसन बात सुनत ग्वालिन मन। सब्बो झकझकाय के हाँसिन ॥
अब ठौंका रसदा-में आयेव। अब कैसे राजा ला डेरायेव ॥

दोहा

चौंके रहेव अघात तुम, छेंवट आयेव ठाँव ॥
कतको हरिना कूदि है, परिहे भुय्याँ पाँव ॥

चौपाई

मोहन कहिन सुनौ रौताइन ! राजा कंस ला कौन डेराइन ॥
हम जो राजा-के चाकर अन। तेला सुनौ ! बतावत हम हन ॥
काम महीप नाव ओखर है। राज तीन लोक़न-के भर है ॥
भरती चढ़ती असन जवानी। तौंन आय ओखर रजधानी ॥
लिगरी आँखी दूत लगाइन। मोला बीरा देय पठाइन ॥
तेखर भेजे ले मैं आयेंव। तुम्हला इहाँ जगात सुनायेंव ॥
सुनत गोंठ ऐसन रौताइन। सब्बो सुरता चेत भुलाइन ॥
कोनन ? काबर कहाँ खड़े हन ? । रहिस नहीं सुरता एक्को-ठन ॥
आँखी गइन मुंदाय सबो-के। मन भीतर हरि मिलन जमो-के ॥
होइस तौन बखत सुख जैसे। तेला सुनो ! कहौं मैं कैसे ॥
साध नहीं बांचिस थोरको अस। आठो अंग जुड़ाय गइस बस ॥
हरि तब तीर लइन छबि बाहर। आँखी खोल निहारिन सब फिर ॥
गहन मोहाय देख मोहन ला। सपना असन भइन सब झन-ला ॥
कहे लगिन तब सब रौताइन। कोनो नइ तुम्हला गम पाइन ॥

दोहा

कै तुम हौ वैगा हरी, डारेव टोना आय।
थोपनो ऐसन थोप-के, मन-ले गयेव चोराय॥

चौपाई

मोहन सुन्दर श्याम ! सुनौ अब। ग्वालिन हवन तुम्हार शरण सब॥
करिहौ क्षमा जउन कहि पारेन। हम तुमला सर्वस दे डारेन॥
चाहौ करौ प्राण है हाजिर। दही-दूध के बात कउन फिर॥
साध हमार पुरोयेव मोहन। येखर ऋणिया रहिबो सब झिन॥
आवौ ! बैठो ! दोना लावौ !। जतका चाहौ वोतका खावौ॥
सुनत बात हाँसत हैं मोहन। बैठे गइन ले-के संगी मन॥
आपन आपन दही निकारिन। रौताइन मन परुसे लागिन॥
मोहन खावैं सखा खवावैं। कइसे कहौं कहत नइ आवैं॥
बाँधे मोर मूँड़ के माहीं। पहिरे हैं साजू मजुंराही॥
कन्हिया-में-खौंचे-बंसुरी ला। देखत-में मोहत हैं जी-ला॥
दूनो गोड़ पैजनी सोहैं। सोभा लिखे सके अस को-हैं ?॥
हरि तब राधा तनी निहारिन। आँखी मिलत हाँस दूनो पारिन॥
राधा सब-के नजर बचावै। कोनो हँसत देख झन पावैं॥
ठाढ़े भइन फेर मुख राधा। चितवैं नयन कनेखी आधा॥
देख मने मन-में सुख पावैं। एते हँसैं वोते गौंठियावैं॥

दोहा

कहे लगिन् सक्याय तब, मोहन सुन्दर श्याम।
आज दही अड़गंज तुम, सबो खवायेव राम ?॥

चौपाई

राध-मेर लेवना हरि माँगत। चीखौं तो तुम्हर कस लागत ॥
सबके-दुहनी के मैं खायेंव। नइ तुम्हार चीखे-ला पायेंव ॥
दिखथै बने सवो मेर के-ले। लालच लगत हवै देख-ले ॥
कइसे लगथे देय खवाहौ ?। के हम-ला छुच्छा टरकाहौ ॥
नस-नस भींद गइस छिन माहीं। राधा रहे-सकिन-सुन-नाहीं ॥
लेवना एक थपोल उठाइन। मुच-मुच करत अगाड़ी आइन॥
ओंठ उलाय डार मुह देहन। गाल पिचक आपन करि लेइन ॥
हरि चबुलावत मूँड हलाइन। बढ़-के मजा सबो ले पाइन ॥
कहिन गोपाल बहुत मैं खायेंव। येखर नहीं बरोबर पायेंव ॥
कोनो गगरा पानी डारे। कोनो लेवना हवैं निकारे ॥
कखरो दही मही अम्मठ है। सेर-भरके मैदा मिलवट है ॥
कैसनो कोनो हजार बतावे। तोर सवाद-ला-नइ-कोनो पावैं॥
ऊपर ले देखत में सादा। है मिठास सब्बो ले जादा ॥
राधा आभा बच्चन सुनिन जब। गतर गतर-में भेद गइस सब ॥
सुख में आठो अंग जुड़ाइस। जइसे तिनहा हंडा पाइस ॥

दोहा

रोंवा हो गय टाढ़ सब, आनंद कहे न जाय ॥
आँखी ले आँसू घलो, बहे लगिस सुख पाय ॥

चौपाई

जेंखर मन-में जैसने आइस। तैसन ते-हर श्याम जेंवाइस ॥
रस बस कर लौटिन आपन घर। सब-के प्राण-ज्ञान मोहन-पर ॥

श्याम सरूप त्रिभंग अंग जस। सब-के-मन-में रहिस वही बस॥
कोनो नइ कखरो गम पावैं। बही बरोबर रेंगत जावैं॥
फोकट-के गोटी गड़ डारैं। कोनों कांटा गोड़ निकारैं॥
कोनो ला चूरा कसकावै। कोनो पैरी पाँव चढ़ावै॥
चोहल करैं रमूज मड़ावै। तोला गोई! ठौंका भावैं॥
हरि के कहैं चरित्तर फिर-फिर। जैसे जैसे भाव करिन-हरि॥
झझक जांय सब्बो-झन-रहि-रहि। घर कोती बर पाँव उठै नहि॥
ऐसन सबो मया-में साने। रात अघात जान नइ जाने॥
ब्रह्मा जेला ध्यान लगावैं। महादेव जेखर गुण गावैं॥
कोन सुने अरु कोन बतावै। गोकुल तउन जगात उघावै॥
अपन भगत खातिर भगवाना। करथैं चरित अनेक विधाना॥
जेखर जइसन भाव-रथै मन। तेला तइसन मिलथैं मोहन॥
देखैं नन्द अपन बेटवा अस। रौताइन मन जीवन धन-जस॥
काल बरोबर कंस निहारै। भगत प्रगट भगवान विचारैं॥
अपन भगत बर सरग बिहाई। मनखे लीला करिन कन्हाई॥
जेला मनुवा गाहैं सुनिहैं। सगुण समझि के मोला गुनि हैं॥

दोहा

मन-थिर कर के जउन हर, भज लेहै एक बेर॥
नइ आहै निस्तुक कहौं, ते भव सागर फेर॥

कवित्त

छत्तीसगढ़ के मझोत एक राजिम सहर जहाँ जतरा महीना मांघ भरथै ।। देस देस गाँव गाँव के जो रोजगारी भारी, माल असबाब बेचें खातिर उतरथै ।। राजा और, जमीदार मंडल, किसान, धनवान, जहाँ जुरके जमात ले निकरथै ।। सुन्दर सुलाल द्विजराज नाम हबै एक, भाई ! सुनौ तहाँ कविताई बैठि करथै ।।

त्रोटक छन्द

तउने हर एला बनाइस है। अवखाद बरोबर गाइस है।।
गलती कहूँ एमा देख परि हैं। लेड़गा मोला जान क्षमा करिहैं ।।

छत्तीसगढ़ दानलीला की दुर्लभ प्रति का कव्हर पृष्ठ

श्रीहरि

छत्तीस-गढ़ी दानलीला

छत्तीस-गढ़ी-भाषा-रसिकों के चित्त विनोदार्थ
श्रीमत्पण्डित जियालाल त्रिपाठ्यात्मज

पं. सुंदरलाल शर्म्मा-त्रिपाठी

प्रणीत्

प्रकाशक

श्रीचन्द्रशेखर विद्याभूषण शर्म्मा जिमिन्दार

चन्द्रसूर-राजिम-रायपुर सी.पी.

सन 1924 ई.

विश्वविद्यालय के महत्वपूर्ण प्रकाशन

- प्राचीन छत्तीसगढ़ : प्यारेलाल गुप्त
- कोसल कौमुदी : संपादित
- अभिज्ञा : व्याख्यानमालाओं के अंश
- मैं पहले भी यहां आया था : निर्मल वर्मा की रचनाओं पर केंद्रित
- भाषा का स्वराज : पं. रविशंकर शुक्ल के भाषणों का अंश
- आलोक छुआ अपनापन : पं. विद्यानिवास मिश्र की रचनाओं का अंश
- विश्वविद्यालय अधिनियम, परिनियम विनियम एवं अध्यादेश